



आभासी अंक 04

काशी प्रतिबिंब

ई-पत्रिका

जून 2024

राजभाषा विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

संरक्षक की कलम से

ॐ

वाराणसी मंडल, पूर्वोत्तर रेलवे के प्रिय सदस्यगण,

‘काशी प्रतिबिंब’ का नवीन अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

सर्वप्रथम आपको यह सूचित करते हुए मुझे अत्यंत गर्व एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि हमारे मंडल को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रथम पुरस्कार एवं मुख्यालय (गोरखपुर) द्वारा राजभाषा ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।



हमारे रेलवे परिवार के सभी सदस्यों के साथ ही हिन्दी प्रेमियों के सहयोग और समर्थन के लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। हिन्दी भाषा हमारे राष्ट्रीय एकता और गर्व का प्रतीक है और हमारे देश की रूचि, विविधता और सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हमें यह समझना चाहिए कि हिन्दी को बढ़ावा देना और इसका प्रचार-प्रसार व उचित प्रयोग करना हमारी जिम्मेदारी है।

मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप अपने दैनिक जीवन में हिन्दी को समर्थन और प्रोत्साहन दें।

इस प्रकाशन कार्य के लिए राजभाषा विभाग के अधिकारी और सभी कर्मचारियों को बहुत-बहुत बधाई। आपके सहयोग और स्वनात्मक सहयोग के फलस्वरूप ही मंडल की यह पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है।

धन्यवाद,

विनीत कुमार श्रीवास्तव
मंडल रेल प्रबंधक

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

६



‘काशी प्रतिबिंब’ पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आपके साथ संवाद करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

हमारे मंडल को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही, मुख्यालय (गोरखपुर) द्वारा हमारे मंडल को आधार वर्ष 2022 के दौरान राजभाषा का सर्वाधिक प्रयोग करने के लिए अंतर्मंडलीय राजभाषा कार्यकुशलता ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह हम सबके लिए गर्व की बात है। इसी प्रकार हमारे मंडल के सभी सदस्यों के उचित सहयोग और समर्थन से आगे भी हम नए कीर्तिमान स्थापित कर पाएंगे।

मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आप हिन्दी में अपने लेख व मौलिक रचनाएँ राजभाषा विभाग को प्रदान करें तथा हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दें।

आप सभी का सहयोग और समर्थन हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है। इसी के साथ आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ !

धन्यवाद,

रोशन लाल यादव
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा) सह
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

राजभाषा अधिकारी का संदेश

६



‘काशी प्रतिबिंब’ पत्रिका के इस आभासी अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

वाराणसी मंडल राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति पूर्ण रूप से सचेत है और राजभाषा विभाग इस दिशा में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहा है। आपको यह सूचित करते हुए मुझे अत्यंत गर्व एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि हमारे मंडल को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रथम पुरस्कार एवं मुख्यालय (गोरखपुर) द्वारा राजभाषा ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।

आप सभी के सहयोग से हम ‘काशी प्रतिबिंब’ पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन कर पा रहे हैं। आप सभी का साथ और सहयोग हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है। आपका योगदान हमें हमारे उद्देश्यों की दिशा में आगे बढ़ने में सहायक होता है।

हम सभी का लक्ष्य है कि हम हिन्दी भाषा के प्रति अपने ज्ञान और समझ को और भी मजबूत बनाएं। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप अपने दैनिक जीवन में हिन्दी को समर्थन और प्रोत्साहन दें।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए राजभाषा टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

नवनीत कुमार वर्मा
वरिष्ठ आंकड़ा संसाधन प्रबंधक
सह राजभाषा अधिकारी



जून 2024



काशी प्रतिबिंब

ई-पत्रिका

इस अंक में



क्र. सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
01	हिंदी साहित्यकार : जयंति विशेष (भाग - 2)	अमित कुमार साव	05
02	रेल	परितोष कुमार पीयूष	11
03	रेल पथिक	संजय कुमार तिवारी	12
04	“यथा दृष्टि तथा सृष्टि”	विकास कुमार केशरी	13
05	यायावरी	नीरु अवस्थी	15
06	मां सरस्वती वंदन	श्रीकांत सिंह	16
07	निशा-वर्णन	सुरेश कुमार	18
08	क्यों	आशुतोष कुमार विश्वकर्मा	19
09	बाउंडरी मैन	सौरभ कुमार शर्मा	20
10	राजभाषा से संबंधित प्रश्नोत्तरी	पूनम त्रिपाठी	21
11	मैं हूँ थोड़ा सा निराला	रवि झा	25
12	मंडल की गतिविधियां		26
13	राजभाषा विभाग की गतिविधियां		34

संरक्षक

विनीत कुमार श्रीवास्तव

मंडल रेल प्रबंधक

प्रधान संपादक

रोशन लाल यादव

अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा)
सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

नवनीत कुमार वर्मा

वरिष्ठ आंकड़ा संसाधन प्रबंधक
सह राजभाषा अधिकारी

संपादन सहयोग

पूनम त्रिपाठी

वरिष्ठ अनुवादक

ममता यादव

वरिष्ठ अनुवादक

अजय कुमार सिंह

वरिष्ठ अनुवादक

अमित कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

दिव्या शर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

इस ई-पत्रिका की आवरण की डिजाइन एवं पृष्ठों की साज-सज्जा कनिष्ठ अनुवादक अमित कुमार साव द्वारा की गई है
(नोट : पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं)

पत्र व्यवहार : संपादक, काशी प्रतिबिंब, राजभाषा विभाग, पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

ईमेल

: rba.ner.bsb@gmail.com



हिंदी साहित्यकार : जयंति विशेष (भाग - 2)

(अप्रैल - मई - जून)



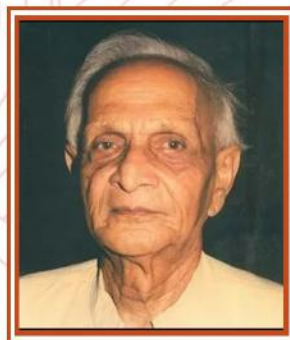
- अमित कुमार साव

“काशी प्रतिबिंब” के मार्च 2024 (आभासी अंक 3) में जनवरी, फरवरी एवं मार्च में जन्में कुछ विशेष साहित्यकारों के बारे में जानकारी प्रदान की गई थी। प्रस्तुत अंक में भाग -2, जो पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित हो रही है, में अप्रैल, मई एवं जून में जन्में कुछ विशेष साहित्यकारों के बारे में जानकारी प्रदान की जा रही है।

अप्रैल

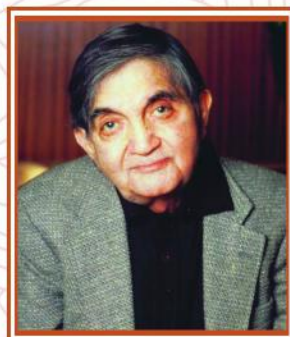
केदारनाथ अग्रवाल (1 अप्रैल, 1911 - 22 जून 2000)

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल, 1911 को उत्तर प्रदेश के बांदा जनपद के कमासिन गाँव में हनुमान प्रसाद गुप्ता व घसीटो देवी के घर हुआ था। उनके पिताजी स्वयं कवि थे और उनका एक काव्य संकलन ‘मधुरिम’ के नाम से प्रकाशित भी हुआ था। केदार जी हिन्दी के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उनके कविता संग्रह ‘अपूर्वा’ के लिये उन्हें 1986 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।



निर्मल वर्मा (3 अप्रैल, 1929 - 25 अक्टूबर 2005)

निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल, 1929 को शिमला में हुआ था। वे हिन्दी के आधुनिक कथाकारों में एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे। उनकी कहानी ‘माया दर्पण’ पर फिल्म बनी, जिसे 1973 का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें मूर्तिदेवी पुरस्कार (1995), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1985), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें सन 2002 में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।



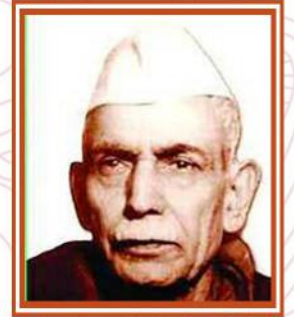
मन्नू भण्डारी (3 अप्रैल, 1931 - 15 नवंबर 2021)

मन्नू भण्डारी का जन्म 3 अप्रैल, 1931 को मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ था। वे हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार थीं। इनके बचपन का नाम महेन्द्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उनकी उपन्यास ‘यही सब है’ पर आधारित ‘रजनीगंधा’ नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसे 1974 की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। उन्हें हिन्दी अकादमी एवं व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया।



माखनलाल चतुर्वेदी (4 अप्रैल, 1889 - 30 जनवरी 1968)

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई नामक स्थान पर हुआ था। वे भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे। 1943 में उस समय का हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा 'देव पुरस्कार' माखनलालजी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था। 1954 में साहित्य अकादमी पुरस्कार की स्थापना होने पर हिन्दी साहित्य के लिए प्रथम पुरस्कार दादा को 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया। 'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी ओजस्वी रचनाओं के रचयिता इस महाकवि के कृतित्व को सागर विश्वविद्यालय ने 1959 में डी. लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया। 1963 में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। 10 सितंबर 1967 को राजभाषा हिन्दी पर आघात करने वाले राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में उन्होंने इसे लौटा दिया।



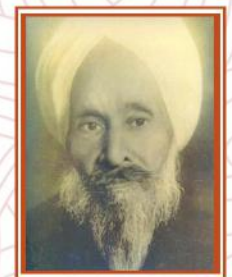
राहुल सांकृत्यायन (9 अप्रैल, 1893 - 14 अप्रैल 1963)

राहुल सांकृत्यायन का जन्म 9 अप्रैल, 1893 को उत्तर प्रदेश के पन्ढहा, आजमगढ़ नामक स्थान में हुआ था। राहुलजी के बचपन का नाम केदारनाथ था। वे हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार थे। वे एक प्रतिष्ठित बहुभाषाविद् थे और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में उन्होंने यात्रा वृत्तांत / यात्रा-साहित्य तथा विश्व-दर्शन के क्षेत्र में साहित्यिक योगदान किए। उन्हें महापंडित की उपाधि दी जाती है। वे हिन्दी यात्रा-साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। बौद्ध धर्म पर उनका शोध हिन्दी साहित्य में युगान्तरकारी माना जाता है, जिसके लिए उन्होंने तिब्बत से लेकर श्रीलंका तक भ्रमण किया था। इसके अलावा उन्होंने मध्य-एशिया तथा कॉकेशस भ्रमण पर भी यात्रा वृत्तांत लिखे जो साहित्यिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्हें 1958 में साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 1963 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

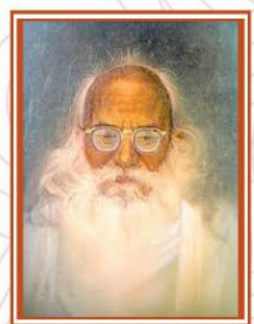


अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (15 अप्रैल, 1865 - 16 मार्च 1947)

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म 15 अप्रैल, 1865 में उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद नामक स्थान में हुआ। वे हिन्दी के कवि, निबन्धकार तथा सम्पादक थे। उन्होंने प्रिय प्रवास नामक खड़ी बोली हिन्दी का पहला महाकाव्य लिखा जिसे 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया था।



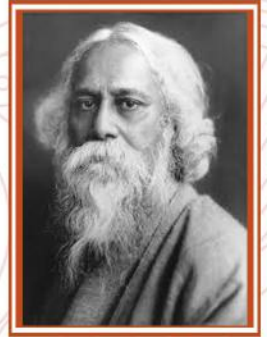
आचार्य चंद्रबली पाण्डेय (25 अप्रैल, 1904 - 24 जनवरी 1958)



आचार्य चंद्रबली पाण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के सठियाँव के नासिरुद्दीनपुर नामक गाँव में 25 अप्रैल, 1904 (संवत् 1961 वि.) में हुआ था। वे हिन्दी साहित्यकार तथा विद्वान थे। उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य के संरक्षण, संवर्धन और उन्नयन में अपने जीवन की आहुति दे दी। वे नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति रहे तथा दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान करने में ऐतिहासिक भूमिका निभायी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर (7 मई, 1861 - 7 अगस्त 1941)

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। उनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता शारदा देवी थीं। वे विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। उन्हें गुरुदेव के नाम से भी जाना जाता है। बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा वे ही थे। वे एकमात्र कवि हैं जिसकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं - भारत का राष्ट्रगान 'जन गण मन' और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं। 1913 में रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनकी काव्यरचना 'गीतांजलि' के लिये साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। वे एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति हैं। 1915 में उन्हें जॉर्ज पंचम ने नाइटहुड की पदवी से सम्मानित किया था। 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में उन्होंने यह उपाधि लौटा दी थी।



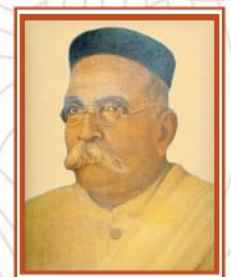
सआदत हसन मंटो (11 मई, 1912 - 18 जनवरी 1955)

सआदत हसन मंटो का जन्म भारत के पंजाब के लुधियाना जिले के समराला के पपरौदी गांव में 11 मई 1912 को बैरिस्टर के एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। वे एक पाकिस्तानी लेखक, नाटककार और लेखक थे ब्रिटिश भारत में और बाद में, 1947 में भारत के विभाजन के बाद, पाकिस्तान में सक्रिय थे। वे मुख्य रूप से उर्दू में लिखते हुए, उन्होंने लघु कहानियों के 22 संग्रह, एक उपन्यास, रेडियो नाटकों की पांच श्रृंखला, निबंधों के तीन संग्रह और व्यक्तिगत रेखाचित्रों के दो संग्रह तैयार किए। उनकी सर्वश्रेष्ठ लघुकथाएँ लेखकों और आलोचकों द्वारा उच्च सम्मान में रखी जाती हैं। उन्हें भारत के विभाजन के बारे में उनकी कहानियों के लिए जाना जाता है, जिसका उन्होंने 1947 में स्वतंत्रता के तुरंत बाद विरोध किया था। मंटो का सबसे उल्लेखनीय काम रेख्ता द्वारा संग्रहीत किया गया है। मंटो पर छह बार अश्लीलता का मुकदमा चलाया गया 1947 से पहले ब्रिटिश भारत में तीन बार, और 1947 में आजादी के बाद पाकिस्तान में तीन बार, लेकिन कभी भी दोषी नहीं ठहराया गया। उन्हें 20वीं सदी के बेहतरीन उर्दू लेखकों में से एक माना जाता है और वह दो जीवनी फिल्मों का विषय हैं: 2015 की फिल्म मंटो, सरमद खूसट द्वारा निर्देशित और 2018 की फिल्म मंटो, नंदिता दास द्वारा निर्देशित।



महावीर प्रसाद द्विवेदी (15 मई, 1864 - 21 दिसंबर 1938)

महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 5 मई 1864 को दौलतपुर गांव (उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले) में हुआ था। वे एक भारतीय हिंदी लेखक और संपादक थे। 1880 के दशक में झाँसी में अपनी भारतीय रेलवे सेवा के दौरान, द्विवेदी ने एक लेखक और साहित्यकार के रूप में व्यापक प्रसिद्धि अर्जित की।



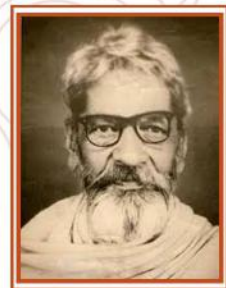
शरद जोशी (21 मई, 1931 - 5 सितंबर 1991)

शरद जोशी का जन्म 21 मई 1931 को मध्य प्रदेश के उज्जैन में श्रीनिवास और शांति जोशी के घर हुआ था। वे एक भारतीय कवि, लेखक, व्यंग्यकार और हिंदी फिल्मों और टेलीविजन में संवाद और पटकथा लेखक थे। 1990 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उन्होंने 'दिल है कि मानता नहीं', 'उत्सव', छोटी सी बात आदि जैसी सफल एवं बहुचर्चित फिल्मों की कहानी लिखी।



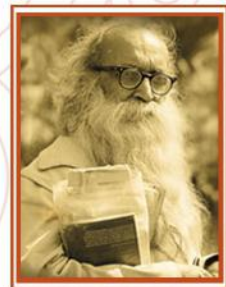
पदुमलाल पन्नालाल बरूशी (27 मई, 1894 - 28 दिसंबर 1971)

पदुमलाल पन्नालाल बरूशी का जन्म राजनांदगांव के एक छोटे से कस्बे खैरागढ़ में 27 मई 1894 में हुआ। इन्हें 'मास्टरजी' के नाम से भी जाना जाता है। वे हिंदी के निबंधकार थे। वे राजनांदगांव की हिंदी त्रिवेणी की तीन धाराओं में से एक हैं।



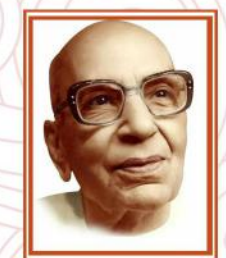
देवेन्द्र सत्यार्थी (28 मई, 1908 - 12 फरवरी 2003)

देवेन्द्र सत्यार्थी का जन्म 28 मई 1908 को पटियाला के भदौड़ ग्राम (जिला संगरूर) में हुआ था। हिंदी, उर्दू और पंजाबी भाषाओं के विद्वान तथा साहित्यकार थे। उनका मूल नाम देवेन्द्र बता था। उन्होंने देश के कोने-कोने की यात्रा कर वहाँ के लोकजीवन, गीतों और परंपराओं को आत्मसात किया और उन्हें पुस्तकों और वार्ताओं में संग्रहीत किया, जिसके लिये वे 'लोकयात्री' के रूप में जाने जाते हैं।



कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (29 मई, 1906 - 9 मई 1995)

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई 1906 को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबन्द ग्राम में हुआ था। वे हिन्दी के कथाकार, निबन्धकार, पत्रकार तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। 1990 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया।



जून

रामप्रसाद बिस्मिल (11 जून, 1897 - 19 दिसंबर 1927)

रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर शहर के खिरनीबाग मुहल्ले में हुआ था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रान्तिकारी धारा के एक प्रमुख सेनानी थे, जिन्हें 30 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सरकार ने फाँसी दे दी। वे 'मैनपुरी षडयन्त्र' व 'काकोरी-काण्ड' जैसी कई घटनाओं में शामिल थे तथा 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के सदस्य भी थे।



रामप्रसाद एक कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषी, इतिहासकार व साहित्यकार भी थे। 'बिस्मिल' उनका उर्दू तखल्लुस (उपनाम) था, जिसका हिन्दी में अर्थ होता है आत्मिक रूप से आहत। बिस्मिल के अतिरिक्त वे 'राम' और 'अज्ञात' के नाम से भी लेख व कविताएँ लिखते थे। 11 वर्ष के क्रान्तिकारी जीवन में उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं और स्वयं ही उन्हें प्रकाशित किया। उन पुस्तकों को बेचकर जो पैसा मिला, उससे उन्होंने हथियार खरीदे और उन हथियारों का उपयोग ब्रिटिश राज का विरोध करने के लिये किया। उनकी लिखी गजल 'सरफरोशी की तमन्ना' क्रान्तिकारी जेल से पुलिस की लारी में अदालत में जाते हुए, अदालत में मजिस्ट्रेट को चिढ़ाते हुए व अदालत से लौटकर वापस जेल आते हुए कोरस के रूप में गाया करते थे। बिस्मिल के बलिदान के बाद तो यह रचना सभी क्रान्तिकारियों का मन्त्र बन गयी।

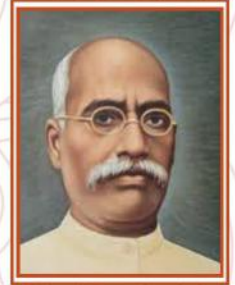
गीतांजली श्री (12 जून, 1957)

गीतांजली श्री का जन्म 12 जून 1957 को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जनपद में हुआ। वे हिन्दी की जानी मानी कथाकार और उपन्यासकार हैं। दिल्ली की हिन्दी अकादमी ने उन्हें 2000-2001 के साहित्यकार सम्मान से अलंकृत किया है। साल 2022 के अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। लेखिका गीतांजलि श्री अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीतने वाली पहली हिन्दी लेखिका बन गई हैं। ऐसा पहली बार हुआ है कि हिन्दी में पहली बार किसी को बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया हो।



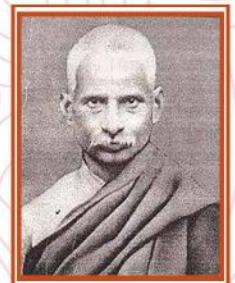
देवकीनंदन खत्री (18 जून, 1861 - 1 अगस्त 1913)

देवकीनंदन खत्री का जन्म 18 जून 1861 (आषाढ कृष्णपक्ष सप्तमी संवत् 1918) शनिवार को बिहार के समस्तीपुर जिले के मालीनगर में हुआ था। वे हिन्दी के प्रथम तिलिस्मी लेखक थे। उन्होंने चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति, काजर की कोठरी, नरेंद्र-मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्र वीर, गुप्त गोदना, कटोरा भर, भूतनाथ जैसी रचनाएँ कीं। 'भूतनाथ' को उनके पुत्र दुर्गा प्रसाद खत्री ने पूरा किया। हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में उनके उपन्यास चंद्रकांता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस उपन्यास ने सबका मन मोह लिया। इस किताब के रसास्वादन के लिए कई गैर-हिन्दीभाषियों ने हिन्दी सीखी। बाबू देवकीनंदन खत्री ने 'तिलिस्म', 'ऐस्यार' और 'ऐस्यारी' जैसे शब्दों को हिन्दीभाषियों के बीच लोकप्रिय बनाया। जितने हिन्दी पाठक बाबू देवकीनंदन खत्री ने उत्पन्न किये उतने किसी और ग्रंथकार ने नहीं।



माधवराव सप्रे (19 जून, 1871 - 23 अप्रैल 1926)

माधवराव सप्रे का जन्म सन् 1871 ई० में दमोह जिले के पथरिया ग्राम में हुआ था। वे हिन्दी के साहित्यकार, पत्रकार थे। वे हिन्दी के प्रथम कहानी लेखक के रूप में जाने जाते हैं। सप्रे जी की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिन्दी की पहली कहानी होने का श्रेय प्राप्त है।



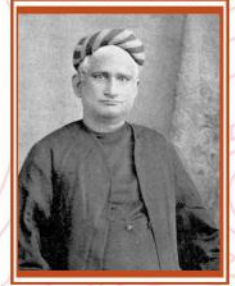
विष्णु प्रभाकर (21 जून, 1912 - 11 अप्रैल 2009)

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून 1912 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के गांव मीरापुर में हुआ था। वे हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक थे जिन्होंने अनेकों लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक तथा यात्रा संस्मरण लिखे। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण, 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास के लिये भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। बाद में 'अर्द्धनारीश्वर' पर उन्हें बेशक साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला हो, किन्तु 'आवारा मसीहा' ने साहित्य में उनका मुकाम अलग ही रखा।



बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (27 जून, 1838 - 8 अप्रैल 1894)

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का जन्म 27 जून 1838 को उत्तरी चौबीस परगना के कंठालपाड़ा, नैहटी में हुआ था। वे बांग्ला भाषा के प्रख्यात उपन्यासकार, कवि, गद्यकार और पत्रकार थे। भारत का राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' उनकी ही रचना है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के काल में क्रान्तिकारियों का प्रेरणास्रोत बन गया था।



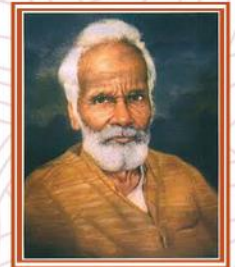
शैल चतुर्वेदी (29 जून, 1936 - 29 अक्टूबर 2007)

शैल चतुर्वेदी का जन्म 29 जून 1936 को अमरावती, महाराष्ट्र में हुआ था। वे भारत के एक हिन्दी भाषा के कवि, व्यंग्यकार, हास्यकार, गीतकार और अभिनेता के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने कई हिन्दी फिल्मों और टीवी श्रृंखला में एक चरित्र अभिनेता के रूप में काम किया।



नागार्जुन (30 जून, 1911 - 5 नवंबर 1998)

नागार्जुन का जन्म 1911 ई० की ज्येष्ठ पूर्णिमा को वर्तमान मधुबनी जिले के सतलखा में हुआ था। यह उन का ननिहाल था। उनका पैतृक गाँव वर्तमान दरभंगा जिले का तरौनी था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। नागार्जुन के बचपन का नाम 'ठक्कन मिसर' था। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था परंतु हिन्दी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में यात्री उपनाम से रचनाएँ कीं। काशी में रहते हुए उन्होंने 'वैदेह' उपनाम से भी कविताएँ लिखी थीं। सन् 1936 में सिंहल में 'विद्यालंकार परिवेण' में ही 'नागार्जुन' नाम ग्रहण किया। वे हिन्दी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार नागार्जुन ने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली संस्कृत एवं बांग्ला में मौलिक रचनाएँ भी कीं तथा संस्कृत, मैथिली एवं बांग्ला से अनुवाद कार्य भी किया। उन्हें 1969 में मैथिली में रचित उनकी कृति 'पत्र हीन ज्वन गाछ' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून 1950 को मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) जिले के बरला गांव में एक अछूत वाल्मीकि परिवार में हुआ। आरंभिक जीवन में उन्हें जो आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्ट झेलने पड़े उसकी उनके साहित्य में मुखर अभिव्यक्ति हुई है। वे वर्तमान दलित साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों में से एक हैं। हिंदी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।



- कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग
म.रे.प्र.(का.), वाराणसी

रेल

- परितोष कुमार पीयूष

मैं जिस रेल पर बैठा हूँ
तुम्हारे स्टेशन पर
देर तक ठहरती, सुस्ताती है
पानी भरती है, ईजन बदलती है
अपने आने की घोषणा करवाती है
अपने एक खास डब्बे में
तुम्हारे पहुँचने का इंतजार करती है

वह रेल तुम्हारे शहर के
ठीक बीचों-बीच होकर गुजरती है

उस जंक्शन से गुजरते हुए
हर दफा मैं तुम्हें महसूसता हूँ
सब-सब बताना, क्या तुम तक
रेल की धड़कनें नहीं पहुँचती
या तुमने कोई
नया शहर बना लिया है...

- समाडि / कोविंग डिपो
छपरा जंक्शन

रेल पथिक

- संजय कुमार तिवारी

सुखद सफल हो सफर आपका।
रेल प्रबंधन सोच रहा है।।
दुर्घटना विहीन रेल हो।
तकनीक नई नित्य खोज रहा है।।

दुर्घटना हो रेल के अंदर। नहीं चाहती रेल कभी।।
रहे सुरक्षित रेल मुसाफिर। और रेल कर्मी सभी।।
रे.सु.बल की कोशिश रहती। पल-पल रेल सुरक्षित हो।।
ए.सी.पी. की घटना ना हो। ना परिचालन बाधित हो।।

लूट डकैती जहर खुरानी। और ठगी सामानों का।।
रे.सु.बल की तत्परता से। ग्राफ गिरा अपराधों का।।
अपराधों से मुक्त रेल हो। रे.सु.बल यह सोच रहा है।।
दुर्घटना विहीन रेल हो। तकनीक नई नित्य खोज रहा है।।

आंधी हो तूफान हो वाहे। घना कोहरा पड़ता है।।
वाभी वाला रेल के पथ की। निगरानी में रहता है।।
गेट मैन हर गेटों पर। तत्परता से कार्य करें।।
स्टेशन के अंदर एस.एम.। पैनल पर मुस्तैद रहे।।

रेल का हर एक कर्मी जब। अपना कर्तव्य निभाता है।।
तभी रेल का परिचालन। सुगम सफल हो पाता है।।

- हेड कांस्टेबल / रेलवे सुरक्षा बल
चौकी दुरौंधा



॥ “यथा दृष्टि तथा सृष्टि” ॥

- विकास कुमार केशरी

उत्तर प्रदेश के किसी विधान सभा के विधायक माधो प्रसाद “रंगीला” एक बार बड़े पहुँचे हुए साधु के छोटे से आश्रम में गया। उसने साधु के बारे में बहुत सुना था। उसके मन में आया कि मैं एक बार जा करके देखता हूँ कि लोग उसकी इतनी तारीफ क्यों करते हैं। जब वह उस आश्रम में गया तो वहाँ पर एक छोटा सा कमरा था, जहाँ पर एक कालीन बिछा हुआ था।

वहाँ पर कुछ लोग नीचे बैठे हुए थे और साधु जी सामने बैठे हुए थे। कुछ सवाल-जवाब चल रहा था। वह नेता उस आश्रम में गया और उसके साथ में चार बॉडीगार्ड भी थे और उसकी यह आदत थी की जहाँ पर भी वह जाता था, लोग अपनी जगह से खड़े हो जाते थे और उसकी तरफ देखते थे, हाथ जोड़ते थे और सर झुकाते थे।

लेकिन यहाँ पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, साधु ने व्यस्त होने के कारण उसकी तरफ देखा तक नहीं। तभी नेता को लगा कि यह मेरी बेइज्जती है और वह इस बात से गुस्सा हो गया। नेता ने थोड़े गुस्से से साधु की बात को बीच में काटते हुए कहा कि “मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।” साधु ने उसकी तरफ देखा और बोला, “आप थोड़ी देर रुकिए, पहले मैं इनके सवाल का जवाब दे दूँ, उसके बाद मैं आपसे बात करता हूँ, तब तक आप अगर चाहे तो आप बैठ सकते हैं।”

बस साधु के इतना कहने की ही देरी थी, नेता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और फिर उसने अपना सारा गुस्सा उस साधु पर निकाल दिया। अभी तक वह नेता बहुत तमीज से आप-आप कह करके बात कर रहा था लेकिन अब वह तू तड़ाक पर उतर आया। नेता ने उस साधु को कहा, “तुझे पता भी है मैं कौन हूँ? और तू किससे बात कर रहा है?”

साधु ने उसकी तरफ देखा और कहा, “मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप कौन हैं, लेकिन आप जो कोई भी हैं, अगर आप चाहते हैं कि मैं आपके सवाल का जवाब दूँ या आप से बात करूँ, तो आपको कुछ देर रुकना होगा।” साधु के इतना कहते ही नेता गुस्से से पागल हो गया और वहीं सब के सामने चीखने-चिल्लाने लग गया।

“अब मैं तुझे तेरी असली औकात दिखाऊंगा, तूने मुझसे पंगा ले करके ठीक नहीं किया, तुझे पता भी है, मैं तेरे बारे में क्या सोचता हूँ।” साधु ने फिर से नेता की तरफ देखा और बड़े ही प्रेम से कहा कि “मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं, आप जो चाहे वह मेरे बारे में सोच सकते हैं।”

फिर नेता ने उससे कहा कि “तू चाहे सुनना चाहता है या नहीं, लेकिन मैं तुझे यही सब के सामने बताऊंगा कि मैं तेरे बारे में क्या सोचता हूँ। तू कोई साधु नहीं है, तू एक बहुत ही घटिया इंसान है, तू एक ढोंगी है, पाखंडी है, और यहाँ पर जितने भी लोग बैठे हैं, उन सबको बेवकूफ बना रहा है। तेरा बस एक ही मकसद है, इन लोगों की जेब में जितना भी पैसा है, वह सब तेरे पास में आ जाए। तू अपने फायदे के लिए इन लोगों का इस्तेमाल कर रहा है और अब मैं तुझे नहीं छोड़ने वाला हूँ। पूरी दुनिया के सामने तेरा पर्दाफाश करके रहूँगा।”

लेकिन उसके इतना बोलने के बाद भी हल्की-सी मुस्कान उस साधु के चेहरे पर बनी ही रही। यह देखकर वह और भी तिलमिला गया और उसने कहा, “अब बहुत हो गया। अब मैं यहां 1 मिनट भी नहीं रुकने वाला, लेकिन अभी भी तेरे पास मौका है, अगर मुझसे माफी मांगनी है या मुझसे कुछ कहना है तो कह सकते हो।”

इतना सब होने के बाद भी साधु के चेहरे पर एक मुस्कान थी और वह बिल्कुल शांत था। फिर उन्होंने अपनी आंखें बंद की और थोड़ी देर बाद फिर अपनी आंखें खोलकर हाथ जोड़े और कहा कि “मुझे आपसे कोई गिला-शिकवा नहीं है। आपके लिए मेरे मन में कोई भी गलत ख्याल नहीं है। जो भी मेरे बारे में आपने कहा, वह आपकी अपनी सोच थी। मुझे आप में कोई भी बुराई नजर नहीं आती है। मुझे आप बहुत ही भले इंसान लग रहे हैं।” साधु के इतना कहते ही नेताजी का दिमाग सातवें आसमान पर पहुंच गया। उसके चेहरे पर एक अजीब-सी खुशी थी क्योंकि उस साधु ने वही कहा जो बाकी सब लोग उस नेता को कहते हैं और वह खुशी-खुशी उस आश्रम से अपने घर की तरफ चला गया। उसने घर जा कर अपने पिताजी को सारी बातें बताई।

जब उसके पिताजी ने पूरी बात सुनी तो थोड़ा-सा मुस्कुराए और अपने बेटे को देखकर बोले कि “उन्होंने तुम्हारी तारीफ नहीं करी। उन्होंने वह नहीं कहा कि जो तुम हो, उन्होंने वह कहा कि जो वह खुद है और तुमने जो कुछ भी उनको कहा - वो नहीं कहा कि जो वो है बल्कि तुमने वह कहा- जो तुम खुद हो।

यही बात वेदों में भी कही गई है “यथा दृष्टि तथा सृष्टि” यह दुनिया तुम्हें वैसी नहीं दिखाती, जैसी यह दुनिया है, यह दुनिया वैसी दिखाती है तुम्हें, जैसे तुम खुद हो। जिसकी नजर जैसी है, उसके लिए यह दुनिया वैसी ही है। अगर तुम अपनी दुनिया को बदलना चाहते हो तो उसका सिर्फ एक तरीका है, अपनी नजर को बदलो।”

- वरिष्ठ लिपिक

आर.टी.आई. सेल

म.रे.प्र., कार्यालय, वाराणसी



यायावरी

- नीरु अवस्थी

शनैः शनैः दिन बीतते चले गये,
ज्यों यौवन बीता तन से,
पते गिरते-वन से,
तुम्हारी यादें मेरे मन से....

ज्यों मरती जाते-जीने की इच्छा,
पहाड़ों पे, घूमने की इच्छा,
बरबस-मुस्कुराने की इच्छा,
तुम-संग जीने की इच्छा.....

ज्यों-बरखा का पानी तट से,
रेशमी-गलियारों से,
रहस्यवाद-जीवन से,
तुम्हारी-प्रतीक्षा मेरी आँखों से....

ज्यों तार टूटे वीणा के,
स्वर-छूटे संगीत के,
गला-रुंधा घुटन के,
तुम्हारी-स्मृतियों के चित्रण से.....

“पूर्वक्षण” है.....
कि, कोई दिन ऐसा आएगा अवश्य-
जब मिलेगा-विवेक को शक्ति और सुकून,
जब ईश्वर के दिव्य-आयाम,
उस ब्रह्मांड की खना,
“परमसत्ता से साक्षात्कार होगा”....

- म.रे.प्र. (का.)
वाराणसी



मां सरस्वती वंदन

— श्रीकांत सिंह

मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे!

हे हंस वाहिनी कंठ बिराजो स्वर मेरे मधुराम कर दो।
वीणावादिनी लय में मिलकर गीत मेरे अमर कर दो।।

दो ज्ञान बोध अबोध खड़ा में द्वारा तेरे मां शारदे
लेखन पाठन में समझ बढ़ाकर जीवन मेरे उबार दे
झोली खाली अभिव्यक्ति की शब्दों को निपुण धार दे
मैं तान बानूं दीन-दुखियों का कुछ ऐसी बसंती ब्यार दे

मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे!

हे वरदायिनी अलख निरंजनी अज्ञानी हूं वर दो
हे विद्यादायिनी प्यास ज्ञान की अब तुम पूरी कर दो

भटकी हुई हैं रहें जीवन की कदम सुपथ कर दे
क्षमा, शील, संस्कार, समीक्षा का जादू भर दे
अक्षर ज्ञान ही काफी नहीं मन शिक्षा का वर दे
हुंकार भरे फिर भारत हर नालंदा अजर कर दे

मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे!



हे पुस्तकधारिणी! भारती हे! भाषा के सारथी कर दो
परवम लहराये हिंदी का गागर में सागर भर दो

मां काव्योदय क्रांति को अपने आशीष का बोल दे
हिंदी के लेखक-कवियों को मंच एक सफल दे
रहे ना साहित्य के भेद कहीं गांव शहर एक कर दे
हर नदी नाले गंगा-यमुना को जोड़ के सागर कर दे

मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे!

हे हंसवाहिनी! कंठ बिराजो स्वर मेरे मधुराम कर दो
वीणावादिनी लय में मिलकर गीत मेरे अमर कर दो।

मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे! मां शारदे!

- जे.ई. / टेली / सीवान



निशा-वर्णन

- सुरेश कुमार

हो थकित दिवस भर के श्रम से
अस्तान्वल में जब भानु डुबा
दिन का अवसान जान स्वर्गकुल
नीलों में कलख गान हुआ।

दूर कहीं माँझी तट पे
बैठा-बैठा गाता मल्हार
सरिता के तट वन विजन बीच
नेपथ्य गान करता पुकार।

सुरभित सुगंध थी बिखेरती
रजनी गंधा की क्यारी
नम कर के तारक थाल समा
आ चली आ रही निमावरी।

धरती की छटा देखने को
लुक छिपकर था बढ़ता निशीथ
बिखरा निज नूतन विमल रश्मि
अर्पित करता स्वर्णिम अतीत।

मैं खड़ा सरित तट देख रहा
जल मध्य छटा रजनीपति की
रह गए चकित हूँ नयन देख
जल बीच छवि के प्रति की।

देखा मैं उसे पलटकर जो
थी रूप राशि की खान खड़ी
अथवा उद्देलित अंतर तल के
ज्वाल बनी अभिलाष खड़ी।

उन्माद भरा यौवन उसका
पलके मधुमास थी वो मिल
बिखरी अलके नभ में घन सा
वाणी थी या कोई कोकिल।

मैं देखने लगा निनिमेष
वह खड़ी रही अवगुंठित हो
मैं बढ़ा बढ़ी वह आ लिपटी
उर से मेरे आवेष्टित हों।

वह पड़ी अंक में थी मेरे
औ आह्लादित थे युगल अधर
होते थे तृप्त युगल लोचन
पाकर शोभा श्री खान प्रखर।

मैं भूल गया अपने पन को
जब मिले अधर से युगल अधर
यौवन की उस मादकता का
मधुपान कर रहा का जीभर।

बेसुध से पड़े रहे दोनों
आयी उषा घबड़ाई सी
वह लौट पड़ी डगमग पग से
शरमायी सी अलसायी सी।

था ज्योतिर हीन हो गयी सोम
उड़गन गण आभा हीन हुए
पर फड़क उठे पंक्षी के फिर
मैं लौट पड़ा विर याद लिए।

- पूर्व मुख्य कार्यालय अधीक्षक
म.रे.प्र. (वाणिज्य), वाराणसी

क्यों



- आशुतोष कुमार विश्वकर्मा

है अगर खामोश जुबानें तो दिल में ये शोर क्यों है।
लेके आँखों में आँसु नाचता मोर क्यों है।।

आया है इंसान मेहमान बनकर इस धरा पर।
तो वह फैला रहा स्वार्थ का कारोबार क्यों है।।

नहीं पाया समझ मानव, आज भी खुदा के इन्साफ को।
उसकी लाठी कंही नर्म कहीं कठोर क्यों है।।

वक्त है लौट चलो वापस, नहीं हो ज्यादा दूर सब के आँसिया से।
नहीं तो निकल जाओगे बहुत दूर तब तक
जब तक समझ में आएगा झूठ का जंगल इतना घनघोर क्यों है।।

जिस दिन समझ जाओगे सच्चे मोहब्बत की दास्तां।
उस दिन जानोगे कृष्ण के लिए राधा की आँखें सराबोर क्यों है।।

चाहते हैं सभी रिश्तों को संभालना, पर डर है झूठे अहम् के टूट जाने का।
नहीं समझ आता मुझे, लोगों में पहले न कदम उठाने की होड़ क्यों है।।

- उप स्टेशन अधीक्षक
वाराणसी कैंट
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

“

हिंदी हमारे देश
और भाषा की प्रभावशाली
विरासत है



- माखनलाल चतुर्वेदी

बाउंडरी मैन

- सौरभ कुमार शर्मा

नमस्कार दोस्तों,

मैं हूँ बाउंडरी मैन....!!

कहने को तो मैं प्रतियोगी छात्र हूँ, पर किस्मत से बेयोजगार हूँ।
किस्मत न तो अच्छी है न ही बुरी, नंबर न इतने खराब आते हैं कि तैयारी छोड़ दूँ, न इतने
अच्छे कि नौकरी ही लग जाये।

ये 1, 2 नंबर से किस्मत 4 साल से मजे ले रही है, दोस्तों के नौकरी पत्र देखकर अच्छा तो
लगता है पर दिल में जो चुभन है वो बर्याँ भी नहीं कर सकता।

हर साल पिछले कटऑफ से ज्यादा लाता हूँ, परीक्षा के 3 पर चरणों को पास भी कर लेता हूँ,
पर ये दशमलव के नंबर ही कम रह जाते हैं और नौकरी फिर सालों दूर चली जाती है।

दोष भी किसे दूँ, घटती वैकेंसी को, निजीकरण को, आरक्षण को, वेटिंग लिस्ट की कमी को,
3 साल लम्बी परीक्षा की प्रक्रिया को या वीटिंग माफिया को, ये कोविंग वाले भी तो कम नहीं..
थक भी नहीं सकता, रुक भी नहीं सकता, न आरक्षण है, न व्यवसाय के पैसे....

दिल पत्थर सा हो गया है, कोई भी ज्ञान देकर चला जाता है, चाहे रिश्तेदार या दोस्त....

ख़ैर समझना तो घरवालों ने भी छोड़ दिया है, और छोड़े भी तो क्यों नहीं, हर बार दशमलव से
ही रह जाता हूँ। हँसती मौज करती दुनिया के बीच गणित और सामान्य ज्ञान में उलझा रहता
हूँ। न कोई गलत लत है, न कोई लड़की दोस्त ही बनती है। और बने भी क्यों जब उनके
पास इतने सारे अच्छे विकल्प हैं।

ख़ैर जिंदगी एक जंग है, आज नहीं तो कल, ये नहीं तो कुछ और सही, करूँगा कुछ न कुछ
जरूर.....

कुछ ऐसा, कुछ बेहतर, जिससे परिवार को नाज हो, फ़क्र हो।

सही रास्ते कब तक तकलीफ़ दे सकते हैं, इसकी लिमिट देखने के लिए बनाये गए हैं, हम
जैसे बाउंडरी मैन....!!

- कांटावाला
दीदारगंज रोड



राजभाषा से संबंधित प्रश्नोत्तरी

६

— पूनम त्रिपाठी



प्रश्न – राजभाषा के प्रयोजन के लिए देश को कितने क्षेत्रों में बांटा गया है?

उत्तर – राजभाषा के प्रयोजन के लिए देश को 'क क्षेत्र', 'ख क्षेत्र' और 'ग क्षेत्र' – तीन क्षेत्रों में बांटा गया है।

प्रश्न – 'क' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य और संघ शासित प्रदेश कौन-कौन से हैं?

उत्तर – बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, उत्तरांचल और छत्तीसगढ़ राज्य तथा दिल्ली और अंडमान निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र हैं।

प्रश्न – 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य और संघ शासित प्रदेश कौन-कौन से हैं?

उत्तर – गुजरात, महाराष्ट्र, और पंजाब राज्य तथा वंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र हैं।

प्रश्न – 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य और संघ शासित प्रदेश कौन-कौन से हैं?

उत्तर – असम, अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, केरल, कर्नाटक, गोवा, जम्मू व कश्मीर, तमिलनाडु, नागालैंड, पश्चिम बंगाल, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर, सिक्किम और त्रिपुरा राज्य तथा लक्षद्वीप और पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र हैं।

प्रश्न – राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) कब प्रवृत्त हुई?

उत्तर – 26 जनवरी, 1965 को।

प्रश्न – राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 किससे संबंधित है?

उत्तर – संसदीय राजभाषा समिति के गठन से संबंधित है।

प्रश्न - संघ की राजभाषा क्या है?

उत्तर - संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी है।

प्रश्न - संविधान के भाग-5 का कौन-सा अनुच्छेद संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा से संबंधित है?

उत्तर - अनुच्छेद-120 से है।

प्रश्न - संविधान के भाग-6 का कौन-सा अनुच्छेद विधान मंडल में प्रयुक्त होने वाली भाषा से संबंधित है?

उत्तर - अनुच्छेद-210 से है।

प्रश्न - संविधान के भाग-17 का संबंध किससे है?

उत्तर - संघ की राजभाषा से है।

प्रश्न - संविधान के भाग-17 में संघ की राजभाषा के प्रयोजन के लिए कितने अनुच्छेद हैं?

उत्तर - 343 से 351 तक कुल 09 अनुच्छेद हैं।

प्रश्न - राजभाषा अधिनियम, 1963 कब पारित हुआ?

उत्तर - 10 मई 1963 को।

प्रश्न - राजभाषा अधिनियम, 1963 का संशोधन कब हुआ?

उत्तर - वर्ष 1967 में।

प्रश्न - प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?

उत्तर - 14 सितंबर को।

प्रश्न - हिंदी को संवैधानिक दर्जा कब मिला?

उत्तर - 14 सितंबर, 1949 को।

प्रश्न - अरुणाचल प्रदेश किस क्षेत्र में आता है तथा उसकी राजभाषा क्या है?

उत्तर - अरुणाचल प्रदेश 'ग' क्षेत्र में आता है तथा उसकी राजभाषा अंग्रेजी है।

प्रश्न - संघ की राजभाषा से संबंधित अनुच्छेद 343 से अनुच्छेद 351 का उल्लेख संविधान के किस भाग में है?

उत्तर - भाग 17 में।

प्रश्न - राजभाषा अधिनियम की धारा 7 का संबंध किसके साथ है?

उत्तर - उच्च न्यायालयों आदि के निर्णयों में हिंदी या अन्य राजभाषा के वैकल्पिक प्रयोग से संबंधित है।

प्रश्न - राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 6 और 7 किस राज्य में लागू नहीं होती?

उत्तर - जम्मू व कश्मीर में।

प्रश्न - किन-किन राज्यों में उर्दू को राजभाषा के रूप में घोषित किया गया है?

उत्तर - आंध्र प्रदेश व बिहार में।

प्रश्न - संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं के नाम बताइए?

उत्तर - असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बंगाली, मराठी, मलयालम, सिंधी, हिंदी, संस्कृत, मणिपुरी, नेपाली, कोकणी, बोडो, संथाल, मैथिली और डोगरी।

प्रश्न - संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाओं को अब तक शामिल किया गया है?

उत्तर - 22 भाषाओं को।

प्रश्न - राजभाषा अधिनियम, 1963 क्यों पारित हुआ?

उत्तर - 1965 के बाद भी हिंदी के अलावा अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने का प्रावधान करने के लिए।

प्रश्न - राजभाषा नियम कब पारित हुआ?

उत्तर - वर्ष 1976 में।

प्रश्न - राजभाषा नियम का संशोधन कब हुआ?

उत्तर - वर्ष 1987 को।

प्रश्न - राजभाषा आयोग का गठन कब हुआ था?

उत्तर - 07 जून, 1955 को।

प्रश्न - 1955 में गठित राजभाषा आयोग का नाम क्या था?

उत्तर - "खेर आयोग"

प्रश्न - 1955 में गठित प्रथम राजभाषा आयोग के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर - बम्बई राज्य के भूतपूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय बाल गंगाधर खेर।

प्रश्न - राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए गठित समिति के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर - भूतपूर्व केन्द्रीय गृहमंत्री स्वर्गीय गोविन्द वल्लभ पंत थे।

प्रश्न - संविधान के अनुसार सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों का अनुवाद कौन करता है?

उत्तर - विधि मंत्रालय

प्रश्न - संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए 1965 तक कौन सी भाषा मुख्य राजभाषा थी तथा कौन-सी भाषा सहायक राजभाषा थी?

उत्तर - अंग्रेजी मुख्य राजभाषा तथा हिंदी सहायक राजभाषा।

प्रश्न - वर्ष 1973 में पहली बार गठित रेल हिंदी सलाहकार समिति के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर - स्वर्गीय ललित नारायण मिश्रा थे।

प्रश्न - वर्ष 1976 में गठित संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर - तत्कालीन गृहमंत्री ओम मेहता थे।

प्रश्न - रेलवे बोर्ड में पहली बार हिंदी सहायक के एक पद का सृजन कब हुआ था तथा किस शाखा के लिए हुआ था?

उत्तर - वर्ष 1952 में रेलवे बोर्ड की सामान्य शाखा के लिए।

प्रश्न - रेल मंत्रालय का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति को कौन सी उप समिति करती है?

उत्तर - संसदीय राजभाषा समिति को दूसरी उप समिति करती है।

प्रश्न - कार्यालयीन काम-काज हिंदी में करने के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा लागू की गयी योजना क्या है?

उत्तर - राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना।

प्रश्न - हिंदी प्रबोध परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मिलने वाला पुरस्कार की राशि क्या है?

उत्तर - 55-59% अंक - रु 400/-

60-69% अंक - रु 800/-

70% या उससे अधिक अंक - रु 1600/-

प्रश्न - हिंदी प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मिलने वाली पुरस्कार की राशि क्या है?

उत्तर - 55-59% अंक - रु 600/-

60-69% अंक - रु 1200/-

70% या उससे अधिक अंक - रु 1800/-

प्रश्न - हिन्दी प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मिलने वाली पुरस्कार की राशि क्या है?

उत्तर - 55-59% अंक - रु 800/-

60-69% अंक - रु 1600/-

70% या उससे अधिक अंक - रु 2400/-

प्रश्न - नाम-पदनाम तथा साइन बोर्ड को किस भाषा क्रम में प्रदर्शित किया जाना है?

उत्तर - 1. प्रादेशिक भाषा 2. हिंदी 3. अंग्रेजी

- वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग



मैं हूँ थोड़ा सा निराला

६

- रवि झा

मैं हूँ थोड़ा सा निराला

मैं तारों से बातें करता हूँ, चाँदनी रात पर मैं जीता हूँ।

जब पत्तों के संग खेलता हूँ, तब भी धरा से लिपट के सोता हूँ।

हाँ, मैं हूँ थोड़ा सा निराला मगर चाहत तुमसे बांधता हूँ।

कभी नदी की धारा हूँ, कभी बूँद बन बादलों में खो जाता हूँ।

मैं सूरज की पहली किरण हूँ, मैं हर सुबह नया सवेरा लाता हूँ।

हाँ, मैं हूँ थोड़ा सा निराला मगर चाहत तुमसे बांधता हूँ।

जो ख्वाब मुझे छू जाए, मैं उसे हकीकत बनाता हूँ।

कल जो खो गया था ख्यालों में, आज उसे दिल से लगाता हूँ।

हाँ, मैं हूँ थोड़ा सा निराला, मगर चाहत तुमसे बांधता हूँ।

बिन जताए दर्द सहता हूँ, बिन बोले दिल की सुनाता हूँ।

बात है बस इतनी सी, जो हर पल तुमसे बाटता हूँ।

हाँ, मैं हूँ थोड़ा सा निराला मगर चाहत तुमसे बांधता हूँ।

- कांटावाला
बनारस



मंडल की गतिविधियां

६



अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुरूप लॉन्ड्री सेवाओं के अच्छे प्रबन्धन के लिये मंडल के बनारस, गाजीपुर सिटी एवं छपरा मैकेनाइज्ड लॉन्ड्री को आईएसओ 9001:2015 ववालिटी मैनेजमेंट सिस्टम एवं आईएसओ 14001:2015 एनवायरमेंटल मैनेजमेंट सिस्टम अंतर्राष्ट्रीय मानक सर्टिफिकेट प्राप्त हुआ ।



पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जिला संघ वाराणसी द्वारा स्काउट डेन से नमो घाट तक साइकिल हाइक एवं स्वच्छता जागरूकता रैली का आयोजन



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन एवं जिला संगठन आयुक्त स्काउट एवं वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (कैरेज एण्ड वैगन) श्री अनुभव पाठक के नेतृत्व में पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जिला संघ वाराणसी द्वारा 31 मार्च 24 को साइकिल हाइक एवं स्वच्छता जागरूकता रैली आयोजित की गई, जिसमें शास्त्री ग्रुप 'ए' के लगभग 22 सदस्यों सहित कुल 25 सदस्यों ने भाग लिया। साइकिल हाइक रैली प्रातः 07 बजे स्काउट डेन में flag ceremony के पश्चात सभी कब्बस, स्काउट्स व रोवर्स को हाइक संबंधित निर्देशन देने के बाद साइकिल हाइक को श्री नरेंद्र पाठक, DOC (s), श्री अमित कुमार (कोषाध्यक्ष) व श्री अमित कुमार जी (जिला सचिव) ने हरी झंडी दिखाकर स्काउट डेन, प्रेक्षा गृह से नमो घाट के लिए खाना हुई। नमो घाट पर पहुंच कर लगभग 10 KG से अधिक कूड़ा, घाट के आस पास भी किनारों से एकत्रित किया गया।



पूर्वोत्तर रेलवे के क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, गाजीपुर में 18 मार्च, 2024 से 02 अप्रैल, 2024 तक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें तीन आउट डोर एवं दो इनडोर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कुल 92 प्रशिक्षुओं ने प्रतिभाग करते हुए 45 मैच खेला। फाइनल मैच दिनांक - 02. 04. 2024 को आयोजित हुआ जिसमें प्रधानाचार्य श्री एस के शर्मा द्वारा विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया।



पूर्वोत्तर रेलवे क्रीड़ा संघ (नरसा) के तत्वावधान में अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए आयोजित खेल-कूद प्रतियोगिता का समापन



पूर्वोत्तर रेलवे क्रीड़ा संघ (नरसा) के तत्वावधान में अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए 05 से 07 अप्रैल, 2024 तक सैयद मोदी रेलवे स्टेडियम, गोल्फ कोर्स एवं रेलवे प्रेक्षागृह, गोरखपुर में चल रहे छठवें खेल-कूद प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के तीसरे एवं अन्तिम दिन 07 अप्रैल, 2024 को रेलवे प्रेक्षागृह, गोरखपुर में समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता एवं उपविजेता टीमों एवं विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को महाप्रबंधक सुश्री सौम्या माथुर ने पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी, पश्चिम मध्य रेलवे/जबलपुर के श्री प्रभात कुमार एवं उनकी टीम द्वारा बनारस स्टेशन का अंतर रेलवे सेफ्टी ऑडिट निरीक्षण



दिनांक 09 अप्रैल, 2024 को प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी, पश्चिम मध्य रेलवे/जबलपुर के श्री प्रभात कुमार एवं उनकी टीम द्वारा बनारस स्टेशन का अंतर रेलवे सेफ्टी ऑडिट निरीक्षण किया गया। इसके साथ ही साथ बनारस स्टेशन पर दुर्घटना राहत यान एवं विकित्सा राहत/मेडिकल यान का गहन निरीक्षण किया और उनमें उपलब्ध उपकरणों एवं मेडिसिन की जाँच की साथ ही उक्त यानों के उपकरणों के क्रमिक अनुस्क्षण की समीक्षा की गयी। इस अवसर पर पश्चिम मध्य रेलवे/जबलपुर के मुख्य सिग्नल इंजीनियर श्री राकेश कुमार, मुख्य यात्री यातायात परिवहन प्रबंधक श्री सुवीर श्रीवास्तव, मुख्य मोटिव पावर इंजीनियर श्री आशीष कुल्हाड़ा, मुख्य टैंक इंजीनियर श्री एल.पी.सिंह, मुख्य विद्युत लोको इंजीनियर श्री श्रवण सिंह पुरोहित, उप मुख्य संरक्षा अधिकारी श्री वी.एस.गौतम सहित पश्चिम मध्य रेलवे/जबलपुर के संबन्धित शाखा अधिकारी तथा पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल से अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री राजेश कुमार सिंह, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी श्री बलेन्द्र पाल, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (कैरेंज एण्ड वैगन) श्री अनुभव पाठक, वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (आपरेशन) श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव, कोचींग डिपो अधिकारी श्री विनीत रंजन एवं वरिष्ठ पर्यवेक्षक उपस्थित थे।



प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी, पश्चिम मध्य रेलवे/जबलपुर एवं उनकी इंटर रेलवे सेफ्टी ऑडिट टीम द्वारा वाराणसी सिटी-गाजीपुर घाट रेल खण्ड का सेफ्टी ऑडिट निरीक्षण



संरक्षित परिचालन, यात्रियों की सुरक्षा एवं तीव्रगामी रेल यात्रा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी, पश्चिम मध्य रेलवे/जबलपुर के श्री प्रभात कुमार एवं उनकी इंटर रेलवे सेफ्टी ऑडिट टीम द्वारा दो दिवसीय निरीक्षण कार्यक्रम के तहत दिनांक 10 अप्रैल, 2024 को वाराणसी सिटी-फेफना रेल खण्ड का विन्डो ट्रेलिंग तथा इस खण्ड में पड़ने वाले स्टेशनों अंतर रेलवे सेफ्टी ऑडिट निरीक्षण किया गया।



पूर्वोत्तर रेलवे वाराणसी मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में मंडल कार्यालय के भारतेन्दु सभा कक्ष में बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर की 133वीं जयंती मनाई गई। मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित एवं बाबा साहब के चित्र पर मालार्पण कर किया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा) श्री रोजन लाल यादव, अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री राजेश कुमार सिंह, मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) श्री कौशलेश सिंह, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री समीर पॉल, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) श्री राकेश रंजन, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर प्रथम श्री ऋषि श्रीवास्तव, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर द्वितीय श्री सत्यम सिंह, वरिष्ठ मंडल विद्युत

इंजीनियर (सामान्य) श्री पंकज केशरवानी, वरिष्ठ मंडल आंकड़ा प्रबंधक श्री नवनीत वर्मा, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री शेख रहमान, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (C&W) श्री अभिनव पाठक, वरिष्ठ मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री रजत प्रिय, वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (आपरेशन) श्री अनिल श्रीवास्तव, मंडल वित्त प्रबंधक श्री राजेश कुमार, जनसम्पर्क अधिकारी श्री अशोक कुमार, सहायक कार्मिक अधिकारी श्री विरेन्द्र यादव, तथा कार्मिक विभाग के निरीक्षकों समेत अनुसूचित जाति/जनजाति कर्मचारी एग्रेसिवेशन के सदस्यों, मजदूर यूनियन के पदाधिकारी एवं रेल कर्मचारियों ने बाबा साहब के चित्र पर पुष्पांजलि समर्पित कर श्रद्धांजली दी।



वाराणसी मंडल के वाराणसी-माधोसिंह जं. रेल खण्ड पर पड़ने वाले बाजारों एवं विद्यालयों में संरक्षा जागरूकता अभियान चलाकर बच्चों को संरक्षा ज्ञान दिया गया



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन एवं वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी श्री बलेंद्र पाल के नेतृत्व में दिनांक 19 अप्रैल, 2024 को वाराणसी मंडल के वाराणसी-माधोसिंह जं. रेल खण्ड पर पड़ने वाले समपार फाटक सं- 16 सी तथा समपार संख्या के निकट पड़ने वाले बाजारों एवं विद्यालयों में संरक्षा जागरूकता अभियान चलाकर बच्चों को संरक्षा ज्ञान दिया गया। इस अवसर पर वाराणसी मंडल के संरक्षा विभाग के संरक्षा सलाहकार सेपटी काउंसलरों में अविनाश मिश्रा, वी.के. सिंह, डी.सी.भास्कर आदि द्वारा रेलवे सुरक्षा बल सदस्यों के साथ क्रमबद्ध रूप से विभिन्न विद्यालयों में सड़क मार्ग से जाकर शिक्षा अदालत के मंचन में सहयोग किया गया। इसके साथ ही रेलवे लाइन के किनारे पड़ने वाले कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, लोकपति त्रिपाठी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आदि विद्यालयों के बच्चों को जागरूकता हेतु लगभग 550 संरक्षा हैण्ड आउट्स का वितरण भी किया गया।

पृथ्वी दिवस पर स्काउट्स एवं गाइड्स के बच्चों द्वारा प्लैनेट वर्सेस प्लास्टिक (Planet vs Plastic) थीम के साथ जागरूकता अभियान चलाया गया



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के निर्देशन एवं जिला संगठन आयुक्त स्काउट एवं वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (कैरेंज एण्ड वैगन) श्री अनुभव पाठक के नेतृत्व में पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जिला संघ वाराणसी द्वारा आज दिनांक 22 अप्रैल 2024 को प्लैनेट वर्सेस प्लास्टिक (Planet vs Plastic) थीम के साथ प्लास्टिक के उपयोग को समाप्त करने के उद्देश्य से स्काउट्स एवं गाइड्स के बच्चों द्वारा पृथ्वी दिवस पर विविध जागरूकता अभियान चलाया गया। पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स बच्चों द्वारा प्लैनेट वर्सेस प्लास्टिक थीम के अंतर्गत प्लास्टिक उत्पादन में 60% की कमी लाने, एकल-उपयोग प्लास्टिक के उन्मूलन और हमारे प्राकृतिक और शहरी पर्यावरण को खतरे में डालने वाले व्यापक प्रदूषण को कम करने, पर्यावरण की रक्षा करने और मानव प्रभाव को कम करने, पृथ्वी को वातानुकूलित रखने हेतु अनेक प्रकार के संदेशों से युक्त नुवकड़ नाटकों का मंचन दशाश्वमेध घाट पर आयोजित कर आम लोगों को जागरूक किया। इसके साथ ही स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत प्लास्टिक कचरा एकत्रित कर रिसाइकलिंग कूड़ेदान में डाला गया। उसके बाद श्री काशी विश्वनाथ कोरिडोर एवं मंदिर परिसर में स्वच्छता हेतु श्रमदान कर मे दर्शन कर यह कार्यक्रम का समापन किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन पूर्वोत्तर रेलवे भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के लीडर श्री पीयूष शर्मा ने कहा यदि हर कोई पृथ्वी के पर्यावरण को बचाने के लिए प्रतिबद्ध हो और हमारे ग्रह और हमारे सामूहिक भविष्य में निवेश करे तो जलवायु परिवर्तन पर काबू पाना संभव है। पृथ्वी दिवस के अवसर पर आयोजित उक्त अभियान में सर्व श्री विकास शर्मा, प्रदीप कुमार, आकाश गुप्ता, पुष्कर रावत माऊ स्काउट मास्टर, प्रशांत प्रकाश, इरामवन्द यादव सीनियर रोवर हिमांशु भारद्वाज के साथ साथ भारत स्काउट एण्ड गाइड जिला संघ वाराणसी के सदस्यों एवं स्काउट एण्ड गाइड बच्चों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

महाप्रबन्धक, पूर्वोत्तर रेलवे सुश्री सौम्या माथुर ने वाराणसी मंडल के 02 कर्मचारियों को संरक्षा के क्षेत्र में सहायनीय कार्य के लिए 'मैन ऑफ द मंथ' घोषित कर नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया



महाप्रबन्धक सुश्री माथुर द्वारा 07 मई, 2024 को महाप्रबन्धक सभा कक्षा में वाराणसी मंडल के 02 कर्मचारियों को संरक्षा के क्षेत्र में सहायनीय कार्य के लिए 'मैन ऑफ द मंथ' घोषित कर नगद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं में वाराणसी मंडल के भटनी-गोरखपुर खंड के समपार संख्या 141 सी. पर गेटमैन के पद पर कार्यरत श्री प्रमोद कुमार ने 25 मार्च, 2024 को कार्य के दौरान पास हो रही गाड़ी सं. 12565 के इंजन से खट-खट की आवाज सुनकर लोको पायलट को सूचित किया, जिससे लोको पायलट ने गाड़ी को रोककर इंजन की जांच की एवं संबंधित को इसकी सूचना देकर ठीक करवाया। श्री प्रमोद कुमार की सजगता एवं तत्परता से एक दुर्घटना बच सकी। वाराणसी मंडल के औड़िहार स्टेशन पर फाटक वाला के पद पर कार्यरत श्री संदीप जायसवाल ने 18 जनवरी, 2024 को अप मालगाड़ी के पास होते समय उसके एक वैगन से धुआं निकलता देखकर तत्काल स्टेशन मास्टर को सूचित किया तथा स्टेशन मास्टर ने कंट्रोल को सूचित कर गाड़ी की जांच करायी गयी तथा उक्त वैगन को गाड़ी से काटा गया। श्री संदीप जायसवाल की तत्परता से एक दुर्घटना को टाला जा सका।



रेलवे बोर्ड के अतिरिक्त सदस्य (मार्केटिंग एवं बिजनेस डेवलपमेंट) श्री राजेश पाठक ने बनारस रेलवे स्टेशन पर उपलब्ध वाणिज्यिक सेवाओं एवं यात्री सुख-सुविधाओं का निरीक्षण



रेलवे बोर्ड के अतिरिक्त सदस्य (मार्केटिंग एवं बिजनेस डेवलपमेंट) श्री राजेश पाठक ने 11 मई, 2024 शनिवार को वाराणसी मंडल के बनारस रेलवे स्टेशन पर उपलब्ध वाणिज्यिक सेवाओं एवं यात्री सुख-सुविधाओं का निरीक्षण किया। इस अवसर पर वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री शेख रहमान, सहायक वाणिज्य प्रबंधक श्री पुष्कर सिंह रावत, सहायक परिवालन प्रबंधक (कोविंग) श्री हीरा लाल, स्टेशन अधीक्षक श्री विवेक कुमार सिंह, उप स्टेशन अधीक्षक (वाणिज्य) श्री सर्वेश पांडेय एवं विभिन्न विभागों के वरिष्ठ पर्यवेक्षक व कर्मचारी उपस्थित थे।



वाराणसी मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर यात्रियों के लिये शीतल पेय जल हेतु 72 वाटर कूलर सहित 2281 पानी की टोटी एवं 348 हैंड पम्प कार्यशील हैं।



पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर यात्रियों के लिये शीतल पेय जल हेतु 72 वाटर कूलर सहित 2281 पानी की टोटी एवं 348 हैंड पम्प कार्यशील हैं। आवश्यकतानुसार अन्य स्थानों पर वाटर कूलर, पानी की टोटी एवं हैंड पम्प लगाये जा रहे हैं तथा खराब वाटर कूलर, पानी की टोटी एवं हैंड पम्प को ठीक कर कार्यशील बनाया जा रहा है। इसी प्रकार, यात्रियों के माँग के अनुरूप सस्ता, सुलभ एवं शुद्ध पेय जल उपलब्ध कराने हेतु प्रमुख स्टेशनों पर वाटर वेंडिंग मशीनों के माध्यम से रेल यात्रियों को सस्ते दर पर आर.ओ. वाटर उपलब्ध कराया जा रहा है।



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के दिशा निर्देश पर वाराणसी मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर मिशन LIFE (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) के तहत पर्यावरण संरक्षण जनजागरूकता अभियान आरम्भ किया



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव के दिशा निर्देश पर पर्यावरण दिवस के पूर्व पर्यावरण में हो रहे जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के उपकरण के रूप में मिशन LIFE (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) के लिए एक जन आंदोलन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के लिए वाराणसी मंडल पर जनजागरूकता अभियान आरम्भ किया है। इसके तहत यात्रियों को स्वच्छता कायम रखने, पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली के अपनाने प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी क्रम में 19 मई, 2024 को वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन पर मिशन लाइफ के तहत पर्यावरण को अनुकूल करने हेतु विभिन्न कदम एवं जन-साधारण को जागरूक करने हेतु रैली निकालकर श्रमदान किया गया।



पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल पर 21 मई, 2024 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने मंडल कार्यालय के रिसेप्शन पर वाराणसी मंडल में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निम्नलिखित शपथ ग्रहण करायी गई। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि आतंकवाद एवं हिंसा के कारण जनता को हो रही तकलीफों तथा राष्ट्रीय हितों पर हो रहे प्रतिकूल प्रभावों के बारे में समाज को जागृत करने एवं राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया जाता है। आतंकवाद विरोधी दिवस युवाओं को आतंकवाद और हिंसा के रास्ते से दूर रहने की प्रेरणा भी देता है। इस अवसर पर वाराणसी मंडल के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।



वाराणसी मंडल के मंडल महिला कल्याण संगठन वाराणसी की अध्यक्ष श्रीमती मोनिका सक्सेना के निर्देशन में मंडल महिला कल्याण संगठन के कार्यकारिणी की सदस्याओं द्वारा मंडल चिकित्सालय अस्पताल में भर्ती महिलाओं एवं बच्चियों को सैनिटरी पैड वितरित किया गया।



महिलाओं के स्वास्थ्य सेवा और मासिक धर्म स्वच्छता (Menstrual Hygiene) जागरूकता की दिशा में सहयोग हेतु पूर्वोत्तर रेलवे वाराणसी मंडल के मंडल महिला कल्याण संगठन वाराणसी की अध्यक्ष श्रीमती मोनिका सक्सेना के निर्देशन में मंडल महिला कल्याण संगठन के कार्यकारिणी की सदस्याओं द्वारा 22 मई, 2024 को वाराणसी मंडल रेलवे चिकित्सालय अस्पताल, वाराणसी पर समाजसेवी संस्था 'दस्तक' के सौजन्य से निःशुल्क सैनिटरी पैड का वितरण किया गया। यह सैनिटरी पैड पूर्वोत्तर रेलवे के मंडल महिला कल्याण संगठन के तत्वावधान में मंडल चिकित्सालय अस्पताल में भर्ती महिलाओं एवं बच्चियों को निःशुल्क वितरित किया गया।

राजभाषा विभाग की गतिविधियां

मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में भारतेंदु सभागार कक्षा में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक तथा साहित्यिक एवं तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन।



मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में भारतेंदु सभागार कक्षा में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, वाराणसी मंडल की तिमाही बैठक, साहित्यिक एवं तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन 28 मार्च 2024 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.) श्री रोशन लाल यादव, अपर मंडल रेल प्रबंधक (ऑप.) श्री राजेश कुमार सिंह, मुख्य परियोजना प्रबंधक (गतिशक्ति) श्री कौशलेश सिंह सहित मंडल के वरिष्ठ अधिकारी तथा विभिन्न विभागों के कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री विनीत कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि वाराणसी शहर अत्यन्त प्राचीन, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों से पूर्ण है। यही कारण है कि इसे भारत की प्राचीन सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है। सभी धर्मों की जीवंत परम्परा यहाँ मौजूद है। बैठक में साहित्यिक गोष्ठी के अंतर्गत मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित काशी विद्यापीठ के सेवानिवृत्त प्रोफेसर श्री श्रद्धानन्द जी ने बताया कि काशी का साहित्य सत्यम शिवम् सुन्दरम् की प्रेरणा से प्रेरित होकर मानव कल्याण का पथ प्रदर्शित करता है। वैसे तो प्रत्येक साहित्यकार अपने युग को जीता है समाज के हर पहलू पर उसकी संज्ञेय दृष्टि होती है। आप साहित्यकारों के साहित्य के माध्यम से उसकी रचना काल के काल खण्ड का इतिहास भली भाँति जान सकते हैं। बैठक में तकनीकी गोष्ठी के अंतर्गत वरिष्ठ मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर-1 श्री रजत प्रिय द्वारा पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से ई-ऑफिस पर हिन्दी में पत्राचार की तकनीकी जानकारी दी और ई-ऑफिस की कार्यप्रणाली पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस बैठक के दौरान राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गयी, पिछले कार्यान्वयन समिति की बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गयी तथा अगली बैठक हेतु सुझाव लिए गये। धन्यवाद ज्ञापन राजभाषा अधिकारी श्री नवनीत कुमार वर्मा द्वारा किया गया।

मंडल की विविध गतिविधियों के प्रचार निरीक्षक

संतोष कुमार
वरिष्ठ प्रचार निरीक्षक

हिमांशु राव
मुख्य प्रचार निरीक्षक

काशी-कैनवास



पेंटिंग :

अमित कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

राजभाषा विभाग, म.रे.प्र. (का.), वाराणसी